RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 26 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 9 सितम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 26, 6-9 सितम्बर 2018 तदनुसार 24 भद्रपद, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हम विजयघोष करते हैं

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

एको बहूनामसि मन्य ईडिता विशंविशं युद्धाय सं शिशाधि।
अकृत्तरुक्त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्मसि।।

-अ० ४।३१।४

शब्दार्थ-हे **मन्यो** = मननशील, शत्रु पर क्रोध करने वाले विजिगीषो! तू **एकः** = अकेला **बहूनाम्** = बहुतों का **ईडिता** = सत्कार करने वाला **असि** = है। तू **अकृत्तरुक्** = क्षति न उठाता हुआ **विशं-विशम्** = समस्त प्रजाओं को **युद्धाय** = युद्ध के लिए **सं+शिशाधि** = भली-भाँति उत्तेजित कर और हम **त्वया+युजा** = तुझसे युक्त होकर **द्युमन्तम्** = तेजस्वी **घोषम्** = घोष, घोषणा **विजयाय** = विजय के लिए **कृण्मसि** = करते हैं।

व्याख्या-युद्धविद्याविशारद विचारशील सेनापति को उत्साहित करते हुए कहा जा रहा है कि-**एको बहूनामसि मन्य ईडिता** = हे मन्यो! तू अकेला ही बहुतों की पूजा करने वाला है। युद्ध केवल सैनिकों या अस्त्रशस्त्रों से ही नहीं लड़ा जाता। युद्ध में विजय का निर्भर बहुत-कुछ सेनासञ्चालन पर निर्भर होता है। यदि सेनासञ्चालन बुद्धिपूर्वक किया जाए तो विजय अवश्यम्भावी है। सञ्चालक को यहाँ 'मन्यु' कहा गया है। 'मन्य' शब्द का मूल अर्थ है-मनन करना, विचार और साथ ही अभिमानपूर्वक शत्रु के प्रति क्रोध न हो, तो वह क्या लड़ेगा और क्या लड़ाएगा ? किन्तु अकेला मननकर्त्ता क्रोधयुक्त सेनासञ्चालक कुछ नहीं कर सकता, यदि राष्ट्र से उसे अपेक्षित जन और धन की सहायता न मिले और यह तब ही मिल सकती है जब कि प्रजा में विजय के लिए वैसा ही उत्साह हो, अतः सेनापति को कहा गया है-**'विशंविशं युद्धाय सं शिशाधि'** = प्रजामात्र को युद्ध के लिए एक समान उत्तेजित कर।

प्रजा यदि युद्ध के लिए पूर्णतया उत्तेजित और उत्साहित हो, तो फिर जयघोष करने में देर नहीं लगानी चाहिए। अतः कहा-**त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्मसि** = तुझसे युक्त होकर हम तेजस्वी-घोष करते हैं। सेनापति मननशील है, राष्ट्र उत्साहित है, सेना का पूर्ण सहयोग है, फिर विजयघोष करने में कोई क्षति नहीं है। यजुर्वेद (१७।४२) में मानो विजयघोष की सामग्री का निर्देश किया है-

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि।
उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद् रथानां जयतां यन्तु घोषाः।।

हे मघवन्! हथियारों को तीक्ष्ण कर तथा मेरे उत्तम शक्तिसम्पन्न योद्धाओं के मनों को हर्षित और उत्साहित कर। शत्रुनाशक! वाजियों=घोड़ों=युद्धोपकरणों के वेगों को उग्र कर। तब जीतते हुए रथों के घोष होंगे।

इस सामग्री के बिना विजय-घोषणा विडम्बना-मात्र होती है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।
वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।।

-यजु० ३.१७

भावार्थ-हे सर्वरक्षक जगदीश! आप सबके शरीरों की रक्षा करने वाले और आयु प्रदान करने वाले हैं, अतः आपके पुत्र जो हम हैं, इनकी रक्षा करते हुए लम्बी आयुवाला बनाओ। हम पाप और दुराचारों में फँसकर कभी नष्ट भ्रष्ट न हों। दयामय भगवन्! अविद्या आदि दोषों को दूर करने वाला वर्चस् जो ब्रह्मतेज है, उसके दाता भी आप ही हो, हमें भी वह तेज प्रदान करो, जिससे हम अपना और अपने स्नेहियों का कल्याण कर सकें। भगवन्! आप सर्वगुण सम्पन्न हो, हमारी न्यूनता दूर करके हमें अनेक शुभ गुण सम्पन्न करो, ऐसी हमारी नम्र प्रार्थना को स्वीकार करें।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।

-यजु० ३.६.२

भावार्थ-हे सब बड़े-बड़े ब्रह्माण्डों के कर्ता, हर्ता और नियन्ता परमात्मन्! जो मेरे नेत्र, हृदय, मन, वाणी, श्रोत्रादिकों का छिद्र, अर्थात् तुच्छता, निर्बलता और मन्दत्वादि दोष हैं, इन का निवारण करके, मेरे सब बाह्य इन्द्रिय और अन्तःकरण को सत्य धर्मादिकों में स्थापन करें जिससे हम सब आपकी वैदिक आज्ञा का पालन करते हुए, सदा कल्याण के भागी बनें। हे सारे भुवनों के स्वामिन्! हम आपके पुत्र हैं, अपने पुत्रों पर कृपा करते हुए हम सबका कल्याण करें।

स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि।
सूर्य्यस्यावृतमन्वावर्ते।।

-यजु० २.२६

भावार्थ-हे अजन्मा सर्वोत्तम ज्ञानस्वरूप विज्ञानप्रद परमात्मन्! आप बड़े-बड़े ऋषि महर्षियों को भी वैदिक ज्ञान और आत्मज्ञान के देने वाले हैं, कृपया हमें भी ब्रह्मज्ञानरूप वर्चस् देकर श्रेष्ठ बनावें। चराचर जगत् के आत्मा सूर्य जो आप, आपकी आज्ञा का पालन करते हुए हम सबको उपदेश देकर आप का सच्चा ज्ञानी और प्रेमी-भक्त बनाएँ। यह भौतिक सूर्य जैसे अन्धकार का नाशक और सबका उपकार कर रहा है, ऐसे हम भी अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करते हुए सबसे उपकार करने में प्रवृत्त होवें।

वेदों में गणतन्त्रात्मक शासन

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी दयानन्द सरस्वती का कथन है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब विद्याओं में राज्य व्यवस्था सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। राज्य में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य राज्य व्यवस्था का ही तो है। चारों वेदों में राज्य व्यवस्था और शासन प्रबन्ध से संबंधित लगभग 1250 मंत्र है। वेद में राज्य व्यवस्था के उद्गम का सिद्धान्त राजा और प्रजा के मध्य हुआ सामाजिक समझौते का सिद्धान्त है। राजा और प्रजा के मध्य समझौते में राजा को प्रजा ने कुछ विशेष अधिकार दिये और राजा ने दुष्ट आततायी लोगों से प्रजा की रक्षा का उत्तरदायित्व लिया। वेद में इस विषय पर निम्नांकित वर्णन हुआ है।

पाहिनो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठय।। ऋ. 1.36.15

हे (बृहद्भानो) बड़े-बड़े विद्यादि ऐश्वर्य के तेज वाले (यविष्ठय) अत्यन्त तरूण अवस्था युक्त (अग्ने) तेजस्वी राजन्। आप (धूर्ते) कपटी, अधर्मी (अराव्णः) दान-धर्म रहित कृपण (रक्षसः) महा हिंसक, दुष्ट मनुष्य से (नः) हमको (पाहि) बचाइये। (रिषतः) सबको दुःख देने वाले मनुष्य से हमें पृथक् रखिये (उत) और (वाः) भी (जिघांसत) मारने की इच्छा करने वाले शत्रु से हमारी (पाहि) रक्षा कीजिए। खेती बाड़ी, धन, धान्यादि सब पदार्थों की रक्षा पूर्वक (उत्पत्ति) और न्याय पूर्वक विभाजन राज्य के द्वारा ही संभव है।

सुष्वाणास इन्द्रस्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तु विनृम्णवाजं।
आ नो भर सुवितं यस्य कोनातनात्मना सहयाम त्वोताः।।
सा पूर्वा चिंक अ. 3 नवति दशति मं. 4

अर्थ-हे राजन्। सोमादिकों को उत्पन्न करते हुए और धान्यादि का न्याय पूर्वक विभाग करते हुए आपकी हम स्तुति करते हैं। हे बहुधन अथवा बहु बल आपसे रक्षित हम जिस धनादि की कामना करें उस प्राप्त करने योग्य धन आदि को हमारे लिए प्राप्त कराइये। हम आपकी कृपा से नाना प्रकार के धनों को प्राप्त करें।

राज्य की आवश्यकता क्यों अनुभव हुई इसके विषय में इसी प्रकार विस्तृत वर्णन वेदों में हुआ है।

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारित-मानृभिः पुरन्हूतः प्रयाहि।
असो यथानाऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः।।

साम. पूर्वा. उनवीं दशति मंत्र 2

अर्थ-(इन्द्र) हे राजन् (सदने) आपके विराजने के लिए (ते) आपका (योनि) राज सिंहासन (आकारि) हमने बनाया है। (पुरूहूतः) हे बहुतों द्वारा पुकारे गए (तम्) उस सिंहासन पर (नृभिः) मंत्रियों सहित (आ प्र याहि) आकर विराजिए। (यथा) जिससे (नः) हमारे (अविता) रक्षक (चित्) और (वृधः) वर्जक (असः) हूजिए। (वसूनि) विद्या और रत्नादि धन (दरः) हमें दीजिए। (च) और (सोम) सोमादि ओषधियों के रसों से (ममद) हृष्ट-पुष्ट होइए।

इस मंत्र से स्पष्ट विदित होता है कि राज्य का निर्माण प्रजा ने स्वयं ही किया है। प्रजा ने ही बहुमत से राजा को चुना है। राजा को प्रजा की रक्षा करना है और राजा द्वारा नियत किए नियमों का पालन करना है।

यह एक समझौतावादी सिद्धांत है जिसके अनुसार प्रजा में व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रजा द्वारा बहुमत से एक शक्तिशाली व्यक्ति को राजा के रूप में चुन कर उसे कुछ निश्चित अधिकार दिए जाते हैं जिसके एवज में वह व्यक्ति प्रजा के रक्षण का भार ग्रहण करता है। व्यवस्था के लिए प्रजा को राजा को कर देना आवश्यक है।

प्रजा महे महे वृधे भरध्वं प्रचेत ते प्रसुमति कृणुध्वं।
विशः पूर्वी प्रचर चर्षणि प्राः।।
साम. पूर्वा. अ. 3 दशमी दशति मं.6

हे मनुष्यों। तुम्हारे बड़े रक्षक सत्कार योग्य बुद्धिमान राजा के लिए तुम कर भरो और अनुकूलता स्थापित करो। मनुष्यों के पालक राजा तुम प्रजाओं को अपने अनुकूल रखो।

राजा को उसकी सेवा के बदले में राज्य की सम्पूर्ण भूमि खानों आदि का स्वामी स्वीकार किया गया है।

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणी नाम-धिक्षमा विश्वरूपं यदस्य।
ततोददाति दाशुषे वसूनि चोद द्राध उपस्तु तं चिदर्वाक्।।
सा. पू. अ 6 प्रथम दशतिः मं. 2

प्रजापालक राजा जंगम पशु आदि और प्रजा का स्वामी है। राज्य में जो कुछ है वह सब राजा का है। राजा उसी में से प्रजा को धन देता है। राजा का चयन सम्पूर्ण प्रजा ने मिलकर किया है। इस पर कहा है-

त्वमग्ने वृणते ब्राह्मणा इमेशिवो अग्ने संवरणे भवानः।
सपत्नहाग्ने अभिमति जिद्भव स्वे गये जागृह्यामयुच्छन्।।

अर्थ-हे तेजस्वी राजन्। हमारे चुनाव में मंगलकारी हो। हे तेजस्वी राजन्। शत्रुओं को विनष्ट करने वाला और अपने सन्तान पर, धन अथवा घर वा अधिकार में चूक न करता हुआ जागता रहे।

पथ्या रेवति बहुधा विरूपाः सर्वां सुगत्य वरायस्ते अक्रन्।
तास्त्वा सर्वां संविदाना ह्वयन्तु दशमी मु ग्रः सुमना वशेह।

मार्ग पर (पैदल) चलने वाली, धनवाली, विविध आकार एवं स्वभाव वाली सब प्रजाओं ने एक मत होकर, मिलकर तेरे लिए यह श्रेष्ठ पद प्रदान किया है। वे सब प्रजाएं तुझको पुकारें। तेजस्वीं और प्रसन्न चित्त तू इस राज्य में दसवीं अवस्था को वश में कर। वेद में अकेले राजा को सर्वोच्च शक्ति प्राप्त नहीं है। राजा को तीन सभाओं के द्वारा दी गई सलाह के अनुसार कार्य करना होता है।

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथः सदासि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गंधर्वा अपि वायु केशाना।।
ऋ. 3.38.6

वेद में कहा गया है कि राजा और प्रजा के पुरूष मिलकर सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा-प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजा सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे। स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

तं सभा च समितिश्च सेना च।
अथर्व. 15.2.9.2
सभ्य सभाव में पाहि ये च सभ्याः सभासदः।।
अथर्व. कां. 19 अनु 7 व 55 मं. 6

उस राज धर्म को तीनों सभा, समिति और सेना मिलकर पालन करे। सभासद और राजा को योग्य है कि राजा सब सभासदों को आज्ञा देवे कि सभा के योग्य मुख्य सभासद तू मेरी सभा की धर्म व्यवस्था का पालन कर और जो सभा के योग्य सभासद हैं वे भी सभा की व्यवस्था का पालन किया करें। इसका आशय यह है कि एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति तदधीन सभा, समाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राज्य सभा के अधीन रहे जो ऐसा न करोगे तो राष्ट्रमेव विशा हन्ति तस्माद्राष्ट्री विश घातुकः।

विशमेव राष्ट्र याद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमति च पुष्टं पशुं मन्यत इति।
शत. का. 13 अनु. 2 ब्रा. 3

जो प्रजा से स्वतंत्र स्वाधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें। इसलिए अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है अर्थात् वह प्रजा को खाये जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह या मांसाहारी हष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

वेद में राष्ट्र की भावना का भी यजुर्वेद अध्याय 10 में विशद वर्णन हुआ है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 125 की ऋचाओं में सभा के अधिकारों का अच्छा वर्णन हुआ है। पाठकों के लिए मैं यहाँ पर दो ऋचाएं प्रस्तुत करता हूँ।

अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथम यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरूत्रा भूरिस्थात्रां भूयां वेशन्तीम।।
ऋ. 10.125. 3

मैं राष्ट्र सभा पूरे राष्ट्र की स्वामिनी हूँ। धनों की सम्यक् प्राप्ति कराने वाली हूँ अर्थात् राष्ट्र का आय-व्यय निर्धारित करती हूँ। उत्तम कार्यों और व्यवहारों की मुख्य सोच विचार और निर्णय करने वाली मैं हूँ। सभी कर्मचारियों के अधिकार और कर्त्तव्य मैं निर्धारित करती हूँ। ये शक्तियां सभा को प्रजा से प्राप्त हुई है। कुछ ऋचाओं में तो राष्ट्र सभा की शक्ति का ऐसा वर्णन हुआ है कि जैसे वह कोई तानाशाह शासक हो।

अहं सुवे पितरस्व भूर्वन्मभवी निरप्रूवन्तः समुद्र।
ततो वितिष्ठे भुवनानु विश्वो-तामूं वर्ष्मणोप स्पृशामि।।
ऋ. 10.125.7

अर्थ-मैं राष्ट्र सभा इस राष्ट्र की शिखर पर पालन राजा को उत्पन्न करती हूँ। वास्तव में राष्ट्र सभा में सर्वाधिक मत प्राप्त व्यक्ति को ही संसद द्वारा प्रधान शासक चुना जाता है मेरा स्थान आकाश में और समुद्र में भी है। इसी कारण से समतल भुवनों में स्थिर रहती हूँ। इस आकाश की श्रेष्ठता को छूती हूँ।

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्ति यः प्राणिति यईश्रृणो-युक्तम्।
अमन्तवो मात उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।
ऋ. 10.125.4

अर्थ-(यः विपश्यति) जो विशेष रूप से उसे देखता है अर्थात् विशिष्ट ज्ञानी है, (यः प्राणिति) जो प्राण युक्त (इम् उक्तम् श्रृणोति) इस वचन को सुनता है (सः) वह (मया) मेरे द्वारा (अन्नम् अत्ति) अन्न खा रहा है। (माम् अमन्तवः) मुझे न मानने वाले (न उप क्षियन्ति) मेरे समीप नहीं होते दूर ही

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर विशेष...

राष्ट्रभाषा व मातृभाषा हिन्दी का सम्मान करें

सभ्यता, संस्कृति और मातृभाषा किसी भी राष्ट्र के गौरव का प्रतीक होती हैं। हमारा राष्ट्र भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न रहा है। अपनी समृद्ध संस्कृति, सभ्यता और भाषा के कारण हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को अपनाकर गौरव की अनुभूति करते थे। प्राचीन वैदिक संस्कृति का जब तक इस देश में प्रचार-प्रसार था, उस समय तक हमारा देश पूर्ण रूप से सम्पन्न था। इस देश में कोई चोरी नहीं करता था, शराब नहीं पीता था, जुआ नहीं खेलते थे, बलात्कार नहीं होते थे। महाराजा अश्वपति जी ने इसी संस्कृति और सभ्यता के बल पर घोषणा की थी कि-

नमेस्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे देश में न कोई चोर है, न जुआरी है, न कोई मद्यपान करता है, हर व्यक्ति के घर में यज्ञ होता है। व्यभिचारी पुरूष ही नहीं हैं तो स्त्रियां कहां से होंगी। ऐसी घोषणा वही कर सकता है जिसे अपनी शासन व्यवस्था पर पूरा विश्वास हो और यह विश्वास केवल अपनी संस्कृति और सभ्यता के उत्कर्ष के कारण था। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी मातृभाषा, संस्कृति और सभ्यता का सम्मान करना चाहिए।

आजादी के पश्चात जब हमारे सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विभिन्न भाषाओं में किस भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया जा सके जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकता के सूत्र में पिरो सके। हमारी भी एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसमें सम्पूर्ण राजकीय, शासकीय कार्य हों। इस समस्या का समाधान करते हुए 14 सितम्बर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। परन्तु बड़े दु:ख की बात है कि वह दर्जा केवल संविधान तक ही सीमित रह गया। हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में जो सम्मान मिलना चाहिए था वो नहीं मिल सका। आज हर कोई अपनी-अपनी डफली,अपना-अपना राग वाली कहावत को सिद्ध कर रहा है। प्रान्तवाद की राजनीति के कारण हिन्दी का राष्ट्रभाषा बनने का स्वप्न अधूरा ही रह गया। वोट बैंक की राजनीति के कारण स्वार्थी नेताओं ने अपने-अपने प्रान्तों में राजकीय कार्यों को अपनी प्रान्तीय भाषाओं में करना प्रारम्भ कर दिया हैं। इस प्रान्तवाद के कारण आज हिन्दी भाषा अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रही है। आज हिन्दी भाषा पर प्रान्तीय बोलियां हावी हो चुकी हैं। जो हिन्दी भाषा सम्पूर्ण भारतवर्ष को एकता के सूत्र में पिरोने की शक्ति और सामर्थ्य रखती है, जिस भाषा के बल पर आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी, आज वही भाषा अपने स्वतन्त्र देश में उपेक्षित और असहाय है।

स्वाधीनता के संघर्ष के समय हिन्दी के प्रचार को स्वराज्य प्राप्ति के समान ही महत्त्व दिया जाता रहा था और सभी स्वाधीन देश अपना राजकाज अपनी देश की भाषा में करते हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी भाषा सशक्त थी, बेचारी नहीं। इसी भाषा के बल पर रावलपिंडी से लेकर ढ़ाका तक स्वतन्त्रता आन्दोलन चला। आजादी के इस महा आन्दोलन में हिन्दी भाषा ने ही देश को जोड़ने का काम किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि राष्ट्रभाषा या राजभाषा वही भाषा बन सकती है जिसमें निम्नलिखित गुण हों-

जिसे देश के अधिकांश निवासी समझते हों, वह सरल हो, वह क्षणिक या अस्थाई हितों को ध्यान में रखकर न चुनी गई हो, उसके द्वारा देश का परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार सम्भव हो सके और सरकारी कर्मचारी उसे सरलता से सीख सके। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि समस्त भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण विद्यमान हैं। आज भी देश के अधिकांश भागों में हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है। इसलिए 14 सितम्बर को संविधान का निर्णय राष्ट्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। इस महत्त्व के कारण इस दिवस को देश भर में विभिन्न संस्थाएं हिन्दी दिवस के रूप में मनाती हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। महर्षि दयानन्द जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत में ही भाषण और लेखन कार्य किया करते थे। प्रचार के लिए जब कलकत्ता पधारे तो वहां भी संस्कृत में ही भाषण दिए जिसका अनुवाद दूसरे विद्वान् किया करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। इसके पश्चात भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि की इन भावनाओं और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार, लेखन कार्य, पत्र-पत्रिकाओं और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढ़ावा दिया। इस प्रकार अपने पिछले इतिहास में आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक, सहायक और संरक्षक के रूप में सामने आया।

हिन्दी दिवस को मनाना अनुचित बात नहीं किन्तु केवल इतना करना भी पर्याप्त नहीं। यह बात निर्विवाद सत्य है कि देश की जनता को एकता के सूत्र में बांधने के लिए देश की एक राष्ट्र भाषा की आवश्यकता है। उस रूप में हिन्दी के महत्त्व को वर्षों पूर्व स्वीकार किया जा चुका है। प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाते हुए इस बात का चिन्तन करें कि गतवर्ष में राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति के लिए कौन-कौन से कार्य किए। हिन्दी दिवस के अवसर पर जहां विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों, वहां शासकीय, शैक्षणिक, व्यापारिक क्षेत्रों में हिन्दी के अधिक प्रयोग के विषय में चर्चा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। तभी उस दिन की सार्थकता है। इन चर्चाओं के आधार पर अगले वर्ष के लिए ठोस एवं क्रमबद्ध कार्यक्रम भी बनाएं जाने चाहिए। आज हम हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यकम आयोजित करते हैं, वक्ता हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश ड़ालते हैं परन्तु व्यवहार में परिणाम शून्य है। लोग अपने घरों के बाहर नेमप्लेट अंग्रेजी में लगाते हैं, विवाह आदि कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपवाते हैं, अंग्रेजी बोलने में गौरव अनुभव करते हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम अपने व्यवहार में हिन्दी को नहीं अपनाते। केवल साल में एक बार हिन्दी दिवस मना लेने से हिन्दी का प्रचार नहीं होगा।

इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि हिन्दी भाषा के ऊपर प्रान्तवाद को, प्रान्तीय भाषा को हावी नहीं होने देंगे, अपने सभी कार्यों में हिन्दी भाषा को प्रमुखता देंगे। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने बड़े भारी मन से यह कहा था कि कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है, न ही राष्ट्रभावना की अभिव्यक्ति कर सकता है। आज का पढ़ा लिखा व्यक्ति अंग्रेजी में बात करना अपनी शान समझता है और अपनी मातृभाषा को बोलने में संकोच अनुभव करता है। जब तक हम इन संकुचित भावों से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद को महत्व नहीं देंगे तब तक हिन्दी भाषा का उत्थान सम्भव नहीं है। हिन्दी भाषा का उत्थान तभी सम्भव जब राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति उसे अपनी मातृभाषा के रूप में मनसा, वाचा स्वीकार करेगा।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

अध्यापक और विद्यार्थी : दशा और दिशा

ले.-डा. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर ओल्ड कैंट रोड फरीदकोट (पंजाब)

शिक्षा और विद्या दोनों का अर्थ एक ही है सीखना अथवा जानना। इन दोनों का उद्देश्य है ज्ञान प्राप्त करना। ज्ञान की प्राप्ति मनुष्य केवल गुरु द्वारा ही कर सकता है। भारत में वैदिक काल से ही गुरु शिष्य परम्परा का प्रचलन रहा है। हमारे मनीषियों ने मानव जीवन को चार भागों में विभक्त किया। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। ब्रह्मचर्य काल ही विद्यार्थी काल अर्थात् विद्या प्राप्त करने का काल माना जाता था। महर्षि लोग नगरों से दूर प्रकृति के आंचल में आश्रमों अथवा गुरुकुलों की स्थापना कर बिना भेदभाव के शिष्यों को शिक्षा प्रदान करते थे। इसके बदले में उनसे कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। राजा लोग आश्रमों को आर्थिक सहायता के रूप में दानादि दिया करते थे। शिष्य भी भिक्षा आदि ग्रहण कर गुरु की सेवा किया करते थे। गुरुकुल में विद्यार्थी वेदवेदांग, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, धनुर्विद्या आदि का ज्ञान प्राप्त करते थे। गुरु और गुरुपत्नी ही माता-पिता का दायित्व पूरा करते थे। मौर्यकाल से पूर्व भारत में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, संगम, वाराणसी आदि अनेक विश्वविद्यालय भी स्थापित हो चुके थे। आक्रमणकारियों ने भारतीय संस्कृति को तहस नहस करने के लिए इन विश्वविद्यालयों को बहुत हानि पहुंचाई। पुस्तकालयों को जला दिया गया। मुगलकाल में मदरसों की स्थापना आरम्भ हुई। ब्रिटिश राज्य में तो शिक्षा का पूरा आधुनिकीकरण ही हो गया। अब गुरुकुलों की जगह विद्यालय और विश्वविद्यालय शिक्षा प्रदान कर रहे है।

शिक्षा के क्षेत्र में चार प्रमुख बिन्दु है अध्यापक, छात्र, माता पिता और समाज। इनमें अध्यापक और छात्र ही विशेष महत्वपूर्ण हैं। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों का सामंजस्य ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अध्यापक और छात्र के सम्बन्धों को आत्मभाव के स्तर पर आंकने की आवश्यकता है। प्राचीन गुरुकुल परम्परा में घर त्याग कर माता-पिता से अलग छात्र गुरुकुल में गुरु के सान्निध्य में ही रहता था। गुरु का आदेश और उपदेश उसके लिए ब्रह्मवाक्य होता था। गुरु ही शिष्य के व्यक्तित्व और चरित्र के निर्माण की भूमिका निभाता था।

कठोपनिषद् में गुरु और शिष्य अपने सम्बन्धों के स्नेहसूत्र में बंधे रहने के लिए ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते हैं।

ओ३म् सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषाव है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अर्थात हे परमात्मा। आप हम गुरु शिष्य दोनों की साथ साथ सब प्रकार से रक्षा करें। हम दोनों का आप साथ-साथ समुचित रूप से पालन पोषण करें। हम दोनों साथ ही साथ सब प्रकार से बल प्राप्त करें। हम दोनों की अध्ययन की हुई विद्या तेजपूर्ण हो। कहीं किसी से हम विद्या में परास्त न हो और हम दोनों जीवन भर स्नेह सूत्र से बंधे रहें। हमारे अन्दर परस्पर कभी द्वेष न हो। तीनों तापों की निवृत्ति हो। भारत में गुरु शिष्य परम्परा अत्यन्त समृद्ध और पुष्ट रही है। यहां तक कि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और शिव का रुप ही दिया गया है। वह ईश्वर का ही स्वरुप है।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

कबीर जी ने तो कहा है कि गुरु ईश्वर से भी श्रेष्ठ है

गुरु गोबिन्द दोउ खडे काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपने जिन गोबिन्द दियो बताय। अपनी सभ्यता और संस्कृति को भी ध्यान में रखना चाहिए। अगर गुरु शिष्य के सम्बन्ध ही समाप्त हो गए तो शिक्षा का अर्थ क्या रह जाएगा। जीवन मूल्यों की रक्षा और संस्कृति की सुरक्षा का दायित्व कौन सम्भालेगा। यही 21वीं सदी के अध्यापक और विद्यार्थी की दशा पर विचार करने और दिशा पर चिन्तन करने का समय है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो शिक्षक और विद्यार्थी दोनों का ही सम्बन्ध शिक्षा से है। समाज और शिक्षा एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। जिस समाज में जैसे आदर्श और मूल्य होंगे शिक्षा भी उन्हीं आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप होगी। अध्यापक उन्हीं मानकों पर अपनी शिक्षा प्रदान करेगा और विद्यार्थी उन्हीं सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं का अनुसरण करेगा। अगर समाज के मानक या मूल्य किसी कारण से बदल जाते है तो शिक्षा के आदर्श भी उसी के अनुरूप बदल जाते है। भारत इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्राचीन शिक्षा पद्धति और आदर्श आज के सन्दर्भ में अत्यन्त भिन्न थे। ब्रिटिश शिक्षा नीति के कारण भारतीय शिक्षा का प्रचार प्रसार इतनी तेजी से बढ़ा कि आज हम पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के मूल्यों के प्रभाव में अपने आदर्शों और शिक्षा के प्रयोजनों को पीछे छोड़ आए हैं। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही इससे प्रभावित हुए है। शिक्षा पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव होने से सम्बन्धों पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कम्प्यूटर और अन्तर्जाल ने शिक्षक के महत्व को कम किया है। गूगल, याहू ही सबका शिक्षक और ज्ञान का भण्डार बन गया है। विज्ञान कितनी भी उन्नति कर ले मगर शिक्षक का महत्व जो विद्यार्थियों के लिए है उसका स्थान कोई नहीं ले सकता। कम्प्यूटर सिखाने के लिए भी तो शिक्षक की आवश्यकता होती ही है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में परिवेश कुछ भिन्न है। वहां केवल शिक्षा के नाम पर औपचारिकताएं निभाई जाती है डिग्रियां बांटी जाती है। शिक्षा के नाम पर लाखों रुपये फीस ली जाती है। मगर ज्ञान शून्य शिक्षा लेकर विद्यार्थी बेरोजगारी की पंक्ति में खड़े हो जाते है। कारण- शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्धों की दूरी और आत्मीयता का अभाव। जैसी शिक्षा होगी वैसा समाज होगा। समाज में अराजकता, असन्तोष, लूटपाट, विध्वंस, हडतालों, धरने, बन्द आन्दोलन आदि होंगे। अध्यापक और छात्र किसी न किसी बात पर आन्दोलन कर रहे होते हैं। विश्वविद्यालयों में दंगे फिसाद होते हैं।

21वीं सदी के सन्दर्भ में शिक्षा के क्षेत्र में मानव मूल्यों और मानवादर्शो की बात कम ही की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार अनुछेद 8.4 में शिक्षा को सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए एक सशक्त साधन बनाने के लिए कहा गया है। नीति की योजना में धर्म निरपेक्ष, वैज्ञानिक, नैतिक मूल्यों, समाज सेवा, श्रम के प्रति आदर, छोटे परिवार में आस्था वातावरण संरक्षण, संस्कृति बोध तथा राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों के विकास पर बल देने की अनुशंसा की गई है। इनमें वैयक्तिक मूल्यों और आचरण और व्यवहार चरित्र निर्माण में सहायक मूल्य हैं। इसी से सामाजिक मूल्यों और राष्ट्रीय मूल्यों की नींव पुष्ट होती है। वैयक्तिक मूल्यों के साथ-साथ सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्यों को अर्जित करने में अध्यापकों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। सामाजिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न वस्तुओं तथा परिस्थितियों के सम्बन्ध में विभिन्न मूल्यों को अध्यापक ही विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते है। समाज में सम्पर्क होने पर व्यक्ति अनेक जीवन मूल्यों को अर्जित करता है। इसमें भी शिक्षक द्वारा बताए गए मूल्यों और आदर्शों की सहायता से वह जीवन मूल्यों को धारण करता है। उसे अच्छे-बुरे का अन्तर करना आता है। हानि लाभ का अन्तर करना आता है और वह एक आदर्श पुरुष और श्रेष्ठ नागरिक बन जाता है। इन सब के बावजूद शिक्षक और विद्यार्थी की दूरी इन मूल्यों का विघटन कर देती है। विद्यार्थी नकारात्मक सोच का शिकार हो जाता है और समाज में अपराध बोध की प्रवृति बढ़ जाती है। शिक्षक ही विद्यार्थी को उचित अनुचित का मार्ग बताता है। कई बार माता-पिता भी लाचार होकर अध्यापक के पास ही आते है कि बच्चा हमारा कहना नहीं मानता है आप ही इसे समझाइए। अध्यापक अपने अनुभव, प्रभाव और व्यवहार से बच्चे का मार्ग दर्शन करता है। हम सब पर अपने-अपने शिक्षकों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। हाँ यह बात अलग है कि आप किस परिवार, विद्यालय अथवा समाज के परिवेश से सम्बन्ध रखते हैं। कोई भी इन्सान अपने जीवन में उस शिक्षक को कभी नहीं भूलता जिसने बच्चों को अपने जीवन में एक अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा दी हो। एक अच्छा शिक्षक ही विद्यार्थी को अच्छी और मूल्यवान शिक्षा प्रदान कर सकता है। दुराचारी अपराधी और व्यसनों से युक्त अध्यापक दूसरे को क्या मार्ग दिखाएगा। कबीर जी ने कहा था

जा का गुरु भी अंधला, चेला

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.41-विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को कितने दिनों के लिए माँगा था?
उत्तर-दस ।
प्र.42-अपने साथ ले जाते हुए विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को कौन सी दो दुर्लभ विद्याओं की शिक्षा दी थी?
उत्तर-बला व अतिबला।
प्र.43-विश्वामित्र के साथ वन जाते समय राम ने सर्वप्रथम किसका वध किया ?
उत्तर- ताड़का राक्षसी का।
प्र.44-राम और लक्ष्मण ने विश्वामित्र के यज्ञ की कितने दिन रक्षा की?
उत्तर- 6 दिन।
प्र.45-यज्ञ की रक्षा करते हुए राम ने किस राक्षस का वध किया?
उत्तर-सुबाहु।
प्र.46-किसके कहने पर दशरथ राम और लक्ष्मण को मुनि को सौंपने को तैयार हुए?
उत्तर- कुलगुरू वशिष्ठ।
प्र.47- सीता के पिता का नाम क्या था?
उत्तर-राजा जनक।
प्र.-48-यज्ञ समाप्ति पर विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को कहां ले गए?
उत्तर- सीता स्वयंवर में।
प्र.49- वनवास जाते समय राम की क्या आयु थी?
उत्तर- 27 वर्ष।
प्र.50-वनवास जाते समय सीता की आयु कितनी थी?
उत्तर- 18 वर्ष।
प्र.51- श्रीराम के वनवास की बात सुनकर लक्ष्मण की प्रथम प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर-युद्ध करके अयोध्या का राज्य छीन लें।
प्र.52-राम के वनवास की बात सुनकर माता कौशल्या की प्रथम प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर-मेरी आज्ञा है कि तुम वन को न जाओ।
प्र.53-श्रीराम ने क्या कहकर अपने वनवास को उचित ठहराया?
उत्तर-पिता की आज्ञा ही सर्वोपरि धर्म है।
प्र.54- राम तथा लक्ष्मण के साथ सीता ने भी वल्कल वस्त्र धारण करने चाहे तो किसने उन्हें रोका और वस्त्र आभूषण सहित जाने को कहा?
उत्तर-राजा दशरथ और गुरू वशिष्ठ।
प्र.55-वनवास जाते समय श्रीराम आदि ने प्रथम रात्रि विश्राम कहां किया?
उत्तर-तमसा नदी के तट पर।
प्र.56-भरत को अपने ननिहाल से अयोध्या आने में कितने दिन लगे?
उत्तर- आठ दिन।
प्र.57-ननिहाल से वापिस आकर जब भरत को पिता की मृत्यु और राम के वनवास का समाचार मिला तो उनकी प्रथम प्रतिक्रिया क्या थी?
उत्तर- भरत ने अपनी माता कैकेयी को बहुत धिक्कारा और राम को वापिस लाने की बात कही।
प्र.58-भरत व गुरू वशिष्ठ आदि के अनुरोध करने पर भी श्रीराम ने क्या कहकर अयोध्या लौटकर राजा बनने से इन्कार कर दिया?
उत्तर-कि वह अपने सत्यनिष्ठ पिता के वचन का पालन करेंगे।
प्र.59-राम के वन गमन के बाद अयोध्या के राजसिंहासन पर कौन आसीन हुआ?
उत्तर- श्रीराम की चरण पादुका।
प्र.60-भरत राम को अयोध्या लौटाने के लिए किस स्थान पर मिले?
उत्तर-चित्रकूट पर्वत पर।
प्र.61-चित्रकूट पर्वत पर भरत आदि से मिलने के बाद उस स्थान को अनुचित मानकर राम कहां गए?
उत्तर- अत्रि मुनि के आश्रम।
प्र.62-राम और लक्ष्मण की शूर्पणखा से मुलाकात कहां हुई?
उत्तर-पंचवटी।
प्र.63-रावण को सीताहरण की सलाह किसने दी?
उत्तर-अकंपन नामक राक्षस ने।
प्र.64-सीताहरण के लिए रावण ने किसकी सहायता ली?
उत्तर-मारीच की।
प्र.65-राम ने जटायु का संस्कार किस नदी के किनारे किया?
उत्तर-गोदावरी।
प्र.66-राम को सुग्रीव के साथ मित्रता करने का सुझाव किसने दिया?
उत्तर-कबन्ध राक्षस ने।
प्र.67-श्रीराम और शबरी का मिलाप कहां हुआ?
उत्तर- पम्पा सरोवर के निकट।
प्र.68-सुग्रीव ने पम्पा सरोवर के निकट राम और लक्ष्मण को देखकर क्या सोचा?
उत्तर-भाई बालि ने उसे मारने के लिए इन्हें भेजा है।
प्र.69- सुग्रीव ने सच जानने के लिए क्या किया?
उत्तर- हनुमान को उनके पास भेजा।
प्र.70-किसने सीता के ठिकाने की बात बताई?
उत्तर- सम्पाति ने।
प्र.71- पुष्पक विमान किसने किसके लिए बनाया था?
उत्तर- विश्वकर्मा ने ब्रह्मा के लिए।
प्र.72-सीता की खोज में जाते समय राम ने हनुमान को पहचान के रूप में क्या चीज दी?
उत्तर-अपनी अंगूठी।
प्र.73-सीता ने श्रीराम के लिए हनुमान को क्या दिया?
उत्तर- चूड़ामणि।
प्र.74- नागपाश में राम और लक्ष्मण को बन्धे देखकर सीता ने क्या सोचा?
उत्तर-राम- लक्ष्मण मारे गए।
प्र.75-किस राक्षसी ने सीता को राम और लक्ष्मण के जीवित होने का विश्वास दिलाया?
उत्तर-त्रिजटा।
प्र.76-कुम्भकर्ण को किसने मारा?
उत्तर-राम ने।
प्र.77- श्रीराम ने राज्याभिषेक के समय किसे युवराज पद देना चाहा?
उत्तर- लक्ष्मण।
प्र.78-राम ने शत्रुघ्न को कहां का राजा बनाया?
उत्तर-मधुपुरी।
प्र.79-श्रीराम किस प्रकार स्वर्गवासी हुए?
उत्तर- सरयू नदी में जल समाधि लेकर।
प्र.80-राम और लक्ष्मण को नाग-पाश से किसने मुक्त कराया?
उत्तर-गरूड़ ने।

पृष्ठ 4 का शेष-अध्यापक और विद्यार्थी...

खरा निरन्ध

अन्धे अन्धों ठेलया, दोनो कूप पडन्त।

आज के युग में जैसा अधकचरा ज्ञान हम विद्यार्थियों को परोस रहे है उससे कैसे शिक्षक पैदा होंगे यह हम सब जानते हैं। मैं सभी शिक्षकों की बात नहीं करता। कुछ मजबूरी में रोजगार प्राप्त करने के लिए ही शिक्षक बन जाते है। कुछ की रुचि नहीं होती। अध्यापक समर्पण, सद्भावना और त्याग का दूसरा नाम है। दूसरी बात उसे अपने विषय में पारंगत होना चाहिए। वह अपने क्षेत्र में ज्ञान का भण्डार हो। कोई दूसरे को तभी दे सकता है अगर उसके पास देने को कुछ हो।

आज 21वीं सदी के दौर में जहां भारत विश्व के अग्रणी देशों में खड़ा है वहां शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पीछे है। अपनी गौरवान्वित संस्कृति और शिक्षा पद्धति को त्याग कर हमने पश्चिमी संस्कृति के अनुसरण पर नई शिक्षण पद्धति को अपना तो लिया है मगर खोया बहुत कुछ है। शिक्षण नीति अभी तक प्रयोगावस्था में है-पाठयक्रम स्थिर नहीं है। योग्य शिक्षकों का अभाव है। शिक्षण प्रणाली, परीक्षा प्रणाली, पाठयक्रम सभी में कुछ न कुछ त्रुटियां है। यह शिक्षा हमारे परिवेश के अनुरूप नहीं बन पाई है। अध्यापक और छात्र दोनों ही इस शिक्षा व्यवस्था से परेशान है, शिक्षा दिशा हीन है। आधुनिकीकरण के नाम पर हमने बहुत कुछ खोया है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोगों के संगठनों राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों, कोठारी कमीशन जैसी सुधारवादी संस्थानों ने भी अनेक सुझाव देकर भारतीय शिक्षा में सुधार लाने के अनेक प्रयास किए मगर छात्र-अध्यापक सम्बन्धों के सुधार पर कभी कोई सुझाव नहीं दिया। इसी से छात्र और अध्यापक इस दसा पर पहुँच गए है कि शिक्षा की इस दुरावस्था पर एक दूसरे पर दोष लगा रहें।

विद्यार्थी कहता है अध्यापक पढ़ाते नहीं है। अध्यापक कहता है बच्चे पढ़ते नहीं हैं। इस परिवेश में छात्र अधिक निराश और हाताश हैं। लाखों करोड़ों खर्च करने पर भी विद्यार्थी अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता है। अध्यापक और छात्र की दूरी निरन्तर बढ़ती जा रही है। अध्यापक की छवि दिनो दिन धूमिल होती जा रही है। इसे सुधारने की आवश्यकता है। अध्यापक अपना दायित्व सम्भाले और छात्र के भविष्य की चिन्ता करें। अपने ज्ञान के प्रकाश से उसका भविष्य भी उज्ज्वल करे। जो शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी है और जीवन का लक्ष्य भी। कहा भी है

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्येतिर्गमय, मृत्योर्मामृतम् गमय

मुझे अन्धकार से उजाले की ओर, असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

फरीदकोट में श्रावणी पर्व मनाया

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट (पंजाब) में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में एक समारोह करवाया गया जिसमें आर्य जगत के वैदिक प्रवक्ता श्री सुशील शर्मा जालन्धर विशेष रूप से पधारे। दिनांक 26-8-2018 दिन रविवार को सायं 4.00 बजे कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया जिसमें प्रथम आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित एवं कर्मठ कार्यकर्ता पं. कमलेश शास्त्री जी ने यज्ञ करवाया जिसमें सदस्य एवं स्त्री आर्य समाज की माताओं ने भाग लिया यज्ञ उपरान्त सत्संग हाल में सुन्दर भजनों द्वारा भक्तों को निहाल किया गया जिसमें प्रथम अजयकुमार (रिंकू) जी ने भजन प्रस्तुत किये इसके बाद कुमारी सुमेधा एवं म्यूजिक लेक्चरार श्री सुखविन्दर सिंह जी अपने मुखारबिंद से सुन्दर मनोहारी भजनों की प्रस्तुति दी जिसे सुनकर सभी आनन्दित हुए तदोपरान्त आचार्य सुशील शर्मा (जालन्धर) ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला और जीवन में यज्ञ व सत्संग को अपनाने पर बल दिया आर्य समाज के पुरोहित प. कमलेश शास्त्री ने कहा कि समाज में सत्संगों की धारा हमेशा प्रवाहित रहनी चाहिए इसे कभी रूकने नहीं देना चाहिए अन्त में मन्त्री सतीश शर्मा जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि सितम्बर महीने की 9 ता. को भी इसी तरह सत्संग का आयोजन किया जायेगा जिसमें मुजफ्फर नगर से आचार्य पवनवीर जी पधारेगें। शान्ति पाठ के बाद सभी को प्रसाद वितरित किया गया एवं जलपान की सेवा की गई।

-सतीश कुमार शर्मा, मन्त्री

वेद सप्ताह एवं श्रावणी उपाकर्म का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वेद सप्ताह 20 अगस्त 2018 से 26 अगस्त 2018 तक बड़े धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि व श्री सुरेश शास्त्री के प्रवचन तथा माता सत्याप्रिया यति जी तथा श्री राजेश अमर प्रेमी जी के भजन हुए। प्रात:काल 7:15 से 9:00 बजे तक स्वास्ति याग के मन्त्रों द्वारा यज्ञ तथा उसके पश्चात यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। रात्रिकालीन बेला में 7:45 से 9:00 बजे तक भजन तथा वेद कथा होती रही।

दिनांक 26 अगस्त 2018 को प्रात: 8:00 बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ। सप्ताह भर बनने वाले सभी श्रद्धालुओं ने यजमान बनकर आहुतियां प्रदान की और यज्ञ को सम्पन्न किया। श्री सोहन लाल सेठ जी ने पूरे परिवार के साथ पावन यज्ञवेदि को सुशोभित किया। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा चैतन्यमुनि जी, माता सत्याप्रिया जी, श्री सुरेश शास्त्री जी तथा अन्य सभी विद्वानों ने सभी यजमानों पर पुष्पवर्षा करते हुए आशीर्वाद दिया और सभी के मंगलमय जीवन की कामना की। यज्ञ के पश्चात सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। तत्पश्चात 10:00 बजे से 11:30 बजे तक श्रावणी के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री राजेश अमर प्रेमी जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। माता सत्यप्रिया यति जी ने दो भजन सुनाकर ऋषि महिमा का गुणगान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा से आए श्री सुरेश शास्त्री जी ने प्रवचन करते हुए स्वाध्याय की महत्ता पर बल दिया। शतपथ ब्राह्मण के आधार पर स्वाध्याय के लाभ बताते हुए उन्होंने कहा कि स्वाध्याय करने वाले व्यक्ति का मन उसके वश में होता है, स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति किसी के पराधीन नहीं होता, स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति अपना चिकित्सक स्वयं बन जाता है। स्वाध्याय से व्यक्ति की यश और कीर्ति फैलती है। महात्मा चैतन्यमुनि जी ने अपने उद्बोधन में गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि मनुष्य को भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी अवश्य करनी चाहिए। कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के संरक्षक श्री सोहन लाल सेठ जी ने सभी विद्वानों का, अतिथि महानुभावों का धन्यवाद किया और इसी प्रकार आगे भी सहयोग देने की कामना की। कार्यक्रम का संचालन लब्भू राम दोआबा स्कूल के प्रधानाचार्य श्री श्रवण भारद्वाज जी ने बहुत ही कुशलतापूर्वक किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया तथा उसके बाद सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

रमेश कालड़ा, महामन्त्री आर्य समाज

पृष्ठ 2 का शेष-वेदों में गणतन्त्रात्मक शासन

रहते हैं। (हे श्रुत) हे विद्वान् (श्रुधि) सुन (ते) तेरे लिए (श्रुद्धिवम्) श्रद्धा योग्य वचन (वदामि) कहती हूँ।

वेद में राष्ट्र की भावना की अभि व्यक्ति यजुर्वेद अध्याय 10 के प्रथम चार मंत्रों में हुई है, वहां बार-बार राष्ट्र दा राष्ट्र मे देहि आप राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव कर रहे हैं कृपया मुझे राष्ट्र पति पद के लिए चुनें। वेदों में राज्य शक्ति का विकेन्द्रीयकरण हुआ है। सम्पूर्ण सत्ता पर एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में इसका अच्छा विस्तृत वर्णन किया हुआ है।

पृष्ठ 8 का शेष-स्त्री आर्य समाज...

मालिक और सम्पादक शीतल विज जी का सम्मान किया गया और उन्हें केरल में बाढ़ग्रस्त क्षेत्र को उबारने के लिये 51,000 रुपये का फंड दिया गया जिसमें विशेष योगदान श्री संजीव चड्ढा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन आर्य समाज की मंत्राणी माता जनक रानी जी ने किया और अंत में कार्यक्रम का धन्यवाद आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती किरण टंडन जी द्वारा किया गया। उन्होंने सभी आर्यजनों का पधारने और सफल बनाने के लिये धन्यवाद किया गया। इस कार्यक्रम में दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना के बच्चों का एवं प्रिंसीपल जी का भरपूर योगदान रहा। स्कूल का सारा स्टाफ भी इस कार्यक्रम में उपस्थित था। कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन किरण कपूर जी, माता सुलक्षणा जी, श्रीमती रेणु बधवा जी, परवीन जी, रीटा अबरोल जी, सीमा चड्ढा जी, अंजू चड्ढा जी, श्रीमती सरोज महाजन, श्रीमती नीलम थापर, श्रीमती सुनीता पाहवा, प्रभा सूद जी, शशि बांडा जी, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के प्रधान श्री सतपाल नारंग जी, मंत्री सुरेन्द्र टंडन जी, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष अबरोल जी, उप प्रधान रमाकांत महाजन जी, संत कुमार, के.के.पासी, परवीन पाहवा, सुरेश चड्ढा, पुष्प खुल्लर, ओम प्रिय चावला, इन्द्रवीर मल्होत्रा जी, आर्य वीर दल के आर्य सुमित टंडन, अजय महाजन, दीपक चोपड़ा, मोहित महाजन, सचिव टंडन, विक्रम टंडन, काका टंडन, अर्पण पाहवा, उज्जवल पाहवा, रवि आर्य, अजय मोंगा, मनु आर्य, कपिल नारंग, श्री बाल किशन शास्त्री, श्री योगराज शास्त्री, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना के प्रधान श्री डा. विजय सरीन जी, अनु गुप्ता जी, स्त्री आर्य समाज माडल टाउन के प्रधाना डाक्टर सुमन जी, राखी डांग जी, निपुण डांग, आर्य समाज हबीवगंज से श्रीमती विनोद गांधी जी, आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान गरीब दास जी, वेद प्रकाश महाजन, भगवान दास कपूर जी आदि सम्मिलित हुये। **-माता जनक रानी मंत्राणी**

शान्ति यज्ञ करके गरीबों को राशन बाँटा

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग में आज शान्ति यज्ञ करके अपने पुराने सदस्य श्री विजय धवन जी की नौवी पुण्य तिथि मनाई गई। पिछले वर्षों की भांति इस बार भी सबसे पहले शान्ति यज्ञ श्री शिवा शास्त्री जी ने जालन्धर से विशेष तौर पर आकर शान्ति यज्ञ करवाया। उन्होंने बड़ी ही श्रद्धापूर्वक शान्ति यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा श्री विजय धवन जी के भाई श्री सतीश धवन तथा उनकी धर्मपत्नी अलोका धवन जी ने इस यज्ञ में आहूति डाली। श्री शिवा शास्त्री जी ने बताया कि हमें अपने जीवन काल में ऐसे काम करने चहिये जिससे लोग मरणोपंरात भी याद रखे जिस तरह श्री विजय धवन जी को आर्य समाज ही नहीं बल्कि बहुत सी संस्थाएं याद करती है तथा अभी-अभी मुझे पता चला है कि फिरोजपुर में वेल्फेयर सोसाईटी ने उनकी पुण्य-तिथि पर आज आंखो का मुफ्त चैकअप कैम्प लगाया है तथा विशाल लंगर का आयोजन भी किया है तो मेरा कहने का यही अर्थ है कि मरणोपरांत भी लोग श्री विजय धवन जी को याद करते है उनका समस्त परिवार कनाडा में बसा हुआ है परन्तु वह कट्टर आर्य परिवार है उनका समस्त परिवार आर्य समाज से जुड़ा हुआ है वैसे भी आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर समय-समय पर गरीबों की भलाई के लिये काम करता आ रहा है आज भी ऐसा एक और काम किया कि गरीबों को राशन बांटा गया ताकि गरीब भी पेट भर खाना खाये। साथ-साथ कुछ लोगों को कपड़े भी वितरित किये गये ताकि वह अपना तन ढक सके। आर्य समाज चाहता है कोई भी भूखा ना सोये तथा कोई ऐसा ना हो जिसके तन पर कपड़ा ना हो। परन्तु कोई पढ़ाई से वंचित ना रहे। श्री शिवा शास्त्री जी ने कहा कि वह भाग्यशाली परिवार होता है जो समय-समय पर यज्ञ करवाता है। हमें वेदों से शिक्षा लेनी चाहिये। वेद माता हमें बहुत कुछ बताती है। यदि हम रोज एक दो पक्तियाँ पढ़े तथा उस पर अमल करे तो मेरे ख्याल में आपका जीवन अवश्य ही सफल होगा। आपका रास्ता भी अलग हो जायेगा आप अच्छे-अच्छे काम करेंगे आपका मन भी शान्त रहेगा।

इस शान्ति महायज्ञ में विशेष तौर पर पधारने वालो में से श्री रविन्द्र मोगा जी, कमल सरीन, अशोक मेहता जी, इन्द्र हाण्डा जी, हरीश हाण्डा, निर्मल धवन, नीलम सरीन, श्री हेमन्त स्याल, चौधरी जी अशोक सिकरी, दीपक सलूजा तथा आर्य समाज छावनी के महामन्त्री श्री मनोज आर्य जी तथा अन्य बहुत से सदस्य ने शान्ति यज्ञ में बड़ी ही श्रद्धापूर्वक आहूति डाली। अन्त में धवन परिवार की तरफ से आर्य समाज मन्दिर के साथ-साथ बहुत सी संस्थाओं को दान भी दिया तथा लंगर का आयोजन भी किया गया। श्री सुरिन्द्र वोहरा जी ने सभी का धन्यवाद किया जिन्होंने श्री विजय धवन जी को श्रद्धांजलि दी।

सुरिन्द्र वोहरा आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग, फिरोजपुर शहर

''श्रावणी पर्व मनाया''

आर्य समाज मन्दिर, जी०टी० रोड़, फिरोजपुर छावनी में श्रावणी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया है। सर्वप्रथम पं० देवराज शास्त्री जी ने विधिवत् श्रावणी पर्व को विशेष आहूतियाँ डलवा कर यज्ञ करवाया। इस यज्ञ में मुख्य यज्ञमान प्रिय अभिषेक चावला अपने जन्मदिवस और श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में बने। उनके साथ उनकी माता श्रीमती रेनु चावला व पिता श्री अजय चावला, ऐडवोकेट भी यज्ञमान बने। यज्ञ के उपरान्त बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम प्रत्येक रविवार को होता है, इन्होंने पारितोषिक भी दिल जाते है। इसके उपरान्त इस समाज के ओजस्वी प्रधान व आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विजय आनन्द जी ने इस श्रावणी पर्व पर अपने विचार रखे और मधुर संगीत से ओतप्रोत भजनों का कार्यक्रम रखा और प्रिय बेटे अभिषेक चावला, सी० ए०, के जन्मदिवस पर विशेष गति सुनाया। इस कार्यक्रम में फिरोजपुर के प्रतिष्ठित सज्जन प्रो० रवि मन्तोष गुलाटी, PNB के अफसर श्री जितेन्द्र गनोत्रा, प्रो० कर्ण आनन्द, मास्टर बृज भूषण भण्डारी, डा० सरोज सहगल, श्री विपन कुमार मित्तल, श्री बसंत वोडरा, डा० अचला गुलाटी (दिल्ली से) श्रीमती मंजु दूबे (नंगल डैम से) श्री पवन महाजन और कुलदीप वर्मा ने अपनी गरिमामई उपस्थिति दे कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

अन्त में श्रीमती स्वर्ण चावला ने परिवार की ओर से सभी को जलपान करवाया।

शान्तिपाठ में उपरान्त कार्यक्रम बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

-मनोज आर्य महामंत्री

श्रीमती विनोद कपूर जी का देहावसान

जे.एम.पी. कम्पनी के एम.डी. श्री मनोज कपूर जी की माता तथा स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर की संयुक्त मन्त्राणी श्रीमती नीरू कपूर जी की सास श्रीमती विनोद कपूर जी का 26 अगस्त को 76 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 27 अगस्त को प्रात: 11:00 बजे मॉडल टॉऊन शमशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्रीमती विनोद कपूर जी धार्मिक विचारों की महिला थी। यह परिवार आर्य समाज के साथ जुड़ा हुआ है तथा प्रतिदिन इस घर में यज्ञ होता है। पूज्य माता जी हमेशा धर्म के कार्यों में लगी रहती थी। उनका धार्मिक जीवन हम सब के लिए प्रेरणादायक है। समाज सेवा के कारण इस परिवार में उद्योग जगत में अच्छा नाम कमाया है। पूज्य माता जी ने अपने बच्चों को भी अच्छे संस्कार दिए हैं जिसके फलस्वरूप वे भी अपने परिवार के यश को बढ़ा रहे हैं। पूज्य माता जी की आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन 29 अगस्त को जैन भवन कपूरथला चौक जालन्धर में 2:00 से 3:00 बजे तक किया गया। इस अवसर पर शहर के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, उद्योग जगत से जुड़े तथा चिकित्सा जगत से जुड़े हर वर्ग के लोगों ने स्व. श्रीमती विनोद कपूर जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा शोक संतप्त परिवार के साथ संवेदना प्रकट की। पूज्य माता जी का निधन केवल परिवार के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमात्मा पूज्य माता जी को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पूज्य माता जी के निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए परमात्मा से उनकी आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना करती है। दु:ख की इस घड़ी में हमारी शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना है।

नये सत्र का शुभारम्भ हवन यज्ञ से

गुरुकुल की पावन तपोभूमि पर स्थित स्वामी गंगा गिरी जनता गर्ल्ज, कॉलेज, रायकोट के प्रांगण में दिनांक 18-8-2018 को पावन हवन-समारोह का आयोजन किया गया। पावन हवन-मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ-कुण्ड में ज्योति प्रज्जवलित करके नये सत्र (2018-19) के शुभारम्भ समय छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की गयी।

इस अवसर पर कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री कौड़ा जी, जनरल सेक्रेटरी श्री राजेन्द्र कौड़ा जी, मैम्बर श्री जयदेव किशन कौड़ा जी एवं मैडम प्रिंसीपल श्रीमती शिल्पा गोयल जी ने मुख्य मेहमान श्री के.के. धीर जी (रिटायर्ड रजिस्ट्रार) पी.टी.यू जालंधर) के पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

हवन-कुण्ड से उठते हुए धुए से सारा वातावरण सुगंधिमय एवं पावन बन गया। हवन के पश्चात कॉलेज की छात्राओं ने भजन-गायन करके इस वातावरण को और भी पवित्र बना दिया।

हवन की समाप्ति पर मैडम प्रिंसीपल जी ने कॉलेज की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने कॉलेज के श्रेष्ठ परीक्षा परिणामों, खेल-कूद प्रतियोगिताओं तथा यूछ-फैस्टीवल में प्राप्त हुई उपलब्धियों की चर्चा की। इस अवसर पर मुख्य-मेहमान, कॉलेज मैनेज़िंग कमेटी के पदाधिकारी, एवं मैडम प्रिंसीपल एवं उपस्थित गणमान्य सज्जनों ने कॉलेज-कलर मैरिट सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाली एवं शैक्षिक क्षेत्र में मैरिट में आने वाली छात्राओं को कैश प्राइज़ एवं ट्रॉफीज़ देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर स. जरनैल सिंह जी (मैनेजर, ओ.बी.सी), स गुरमेल सिंह जी (सरपंच, झोटड़ा), स. हरविन्दर सिंह बराड़ जी (चेयरमैन एस. जी. एन. डी. कन्वेंट स्कूल, आंडलू) समूह स्टाफ तथा इलाके के गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

अन्त में कॉलेज मैनेजमैंट के पदाधिकारियों एवं मैडम प्रिंसीपल जी ने मुख्य मेहमान एवं विशेष मेहमानों को सम्मान-चिन्ह भेंट किये तत्पश्चात कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी ने सबका धन्यवाद किया। **-राजेन्द्र कुमार कौड़ा, जनरल सैक्रेटरी**

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर हवन यज्ञ करते हुये मुख्य यजमान सुनित भाटिया एवं श्रीमती डिम्पल भाटिया। जबकि चित्र दो और तीन में उपस्थित जनसमूह। चित्र में आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी दिखाई दे रहे हैं।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में साप्ताहिक यज्ञ व कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य यजमान सुनित भाटिया एवं श्रीमती डिम्पल भाटिया अपनी वैवाहिक वर्षगांठ पर पवित्र पावन यज्ञवेदि पर उपस्थित होकर आर्य समाज के पुरोहित आचार्य हंसराज शास्त्री ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से यज्ञ सम्पन्न करवाया। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति एवं कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में बहुत ही सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। भारत की सभ्यता के दो नाम याद रखना श्री कृष्ण याद रखना, श्रीराम याद रखना...भजन गायकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य राजू वैज्ञानिक ने अपने प्रवचन में कहा कि निष्काम कर्म ही ईश्वर प्राप्ति का सच्चा मार्ग है। उन्होंने कहा कि यह हमारे उपर निर्भर करता है कि हम गंदे कर्मों से अपने जीवन को प्रकाशित करके मोक्ष को प्राप्त करते हैं। उन्होंने कहा कि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है पर फल की प्राप्ति में परतंत्र है। कर्म चार प्रकार के हैं। पाप, पुण्य, मिश्रित और निष्काम कर्म जिसमें सबसे उत्तम निष्काम कर्म को माना गया है। हमें निष्काम कर्म करते हुये इस संसार रूपी जीवन नौका से पार उतरना चाहिये। परमात्मा इस कार्य में हमारी मदद करें। आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य ने कहा कि वैदिक परम्परा के अनुसार जो परिवार यज्ञवेदि पर उपस्थित होकर अपनी वैवाहिक वर्षगांठ या जन्म दिवस वैदिक संस्कृति से मनाते हैं वह बहुत भाग्यशाली हैं। यह संस्कृति मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगीराज श्री कृष्ण और महर्षि देव दयानन्द एवं ऋषि मुनियों की देन है। उन्हीं का अनुसरण करते हुये यज्ञ वेदि पर उपस्थित होकर पवित्र पावन वेदों के बताये हुये रास्ते पर चलते हुये अपने पर्व मनाते हैं वह सौभाग्यशाली होते हैं। इस अवसर पर श्री कुबेर शर्मा एवं श्रीमती नन्दिनी शर्मा, ईश्वर चंद्र रामपाल, सुभाष आर्य, चौधरी हरिचंद, सुरेन्द्र शर्मा, स्वर्ण शर्मा, श्रीमती विजय शर्मा, विजय कुमार चावला, नवीन चावला, सुरेन्द्र अरोडा, बैजनाथ, अश्विनी डोगरा, कमलेश कुमार, आर्य मित्र गुप्ता, रोहित मित्र गुप्ता, नीलम गुप्ता, पंकज चावला, दिव्या चावला, राजेन्द्र कुमार, सुषमा रानी, डाक्टर अमित शर्मा, सतपाल मल्होत्रा, पूजा तिवारी, रितु मिश्रा, ओम प्रकाश मेहता, रहमत भाटिया, चन्द्रमोहन धीर, अशोक शर्मा, रजनीश सचदेवा, राजीव कुन्दरा, सोनाली गांधी, विवेक राजपाल, उर्मिला शर्मा, कमलेश रानी, दिव्या आर्या, सृष्टि आर्य, रेखा शर्मा, गौरव आर्य, कन्नू आर्या, स्वर्ण शर्मा, राजीव शर्मा, अर्चना मिश्रा, अनु भास्कर, संगीता तिवारी, स्नेहलता कालिया, सुभाष चन्द्र निस्तेन्द्र, बलराज मिश्रा, हितेश स्याल, अनिल मिश्रा, शिवम मिश्रा, सुरेश ठाकुर, प्रिया मिश्रा, संगीता तिवारी, अशोक शर्मा, सीमा अनमोल, केदारनाथ शर्मा, मीनू शर्मा, ललित मोहन कालिया व नगर निवासियों ने भाग लिया। श्री हर्ष लखनपाल ने मंच का संचालन बड़े सुचारू ढंग से किया।

रणजीत आर्य प्रधान
आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में कृष्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंच पर विराजमान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी एवं अन्य एवं अन्य चित्रों में उपस्थित जनसमूह।

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना द्वारा श्री कृष्ण जी के जन्म दिवस पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। गायत्री महायज्ञ में युवा यजमान अजय महाजन जी, दीपक चोपड़ा जी, श्री राजेश मरवाहा जी, आर्य सुमित टंडन जी थे। आचार्य अरविन्द जी शास्त्री जी ने गायत्री महायज्ञ को सम्पन्न करवाया। जिसके पश्चात सुरिन्द्र सिंह गुलशन जी के सुन्दर भजनों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी ने योगीराज श्री कृष्ण जी के जीवन काल के बारे में आई हुई जनता को बताया। श्री विजय शास्त्री जी ने बताया कि योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आदर्श और मर्यादाओं का प्रतीक है। गीता के द्वारा श्रीकृष्ण जी महाराज ने कर्म सिद्धान्त का जो उपदेश दिया उसे धारण करके मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है। ऐसे आदर्श चरित्र, मानवता के पथ प्रदर्शक, चरित्रनायक के जिस स्वरूप को आज समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जिस स्वरूप की झांकियां निकाल कर लोग तालियां बजाते हैं उसे देखकर लगता है कि हम वास्तव में श्रीकृष्ण का जानते ही नहीं है। श्रीकृष्ण जैसा तेजस्वी, संयमी महापुरूष जिन्होंने गृहस्थ में रहते हुए भी 12 वर्ष तक ब्रह्मचर्य के व्रत को धारण किया था ऐसे महापुरूष के चरित्र के साथ वास्तव में अन्याय हुआ है। श्रीकृष्ण के जिस प्रेरक स्वरूप को अपनाकर हम मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं उसी आदर्श स्वरूप को भुलाकर हमने बहुत भूल कर दी है जिसके लिए आने वाली पीढ़ियां कभी क्षमा नहीं करेंगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने श्रीकृष्ण को आप्त पुरूष कहा है जिसने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई भी बुरा कार्य नहीं किया। श्रीकृष्ण जैसा संयमी, योगी, राजनीतिज्ञ, ईश्वरभक्त, कर्मनिष्ठ, धैर्यशील महापुरूष आज तक इस संसार में पैदा नहीं हुआ है। मुजफ्फरनगर गुरुकुल दूधली से पधारे आचार्य पवनवीर जी ने बताया कि हमें योगीराज जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिये। उनके चित्र की नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करनी चाहिये। उनके बताये मार्ग पर चलना चाहिये। आचार्य जी को नये गुरुकुल की स्थापना के लिये स्त्री आर्य समाज की तरफ से 31,000 रुपये का सहयोग दिया गया।स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की सदस्यगण संयोगिता महाजन जी, बाला चोपड़ा जी का उनके आर्य समाज में निष्ठापूर्वब योगदान के लिये विशेष तौर पर सम्मान किया गया। उनका परिवार सहित सम्मान स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती किरण टंडन, आर्य समाज की मंत्राणी श्रीमती जनक रानी जी, कोषाध्यक्ष बाला गम्भीर जी और सुमन अस्पताल से डाक्टर सुमन जी ने किया।

इस कार्यक्रम में विशेष तौर पर पधारे दैनिक सवेरा के (शेष पृष्ठ 6 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।